

für den Weg, für den Gang einer Sache u. s. w. sich eignend) TRIK. 3, 3, 315. H. an. 2, 370. MED. j. 34. पथायोः पथ्यं तत्पित्तस्यापथ्यम् SUÇA. 1, 72, 16. नथ्यः पश्चिमाभिमुखः पथ्या लघूदकत्वात् 172, 4. 175, 11. 198, 16. 236, 18. 2, 22, 1. Cit. beim Schol. zu ÇĀK. 20, 9. व्याधितस्यौषधं पथ्यम् SPR. 1112. अन्ययुक्तं विषं भुक्तं पथ्यं स्यादन्यथा मतिः HARB. Anth. 221, ÇI. 53. परस्योपदिशन्पथ्यमपथ्याशीव रोगकृत् RĀGA-TAR. 6, 68. PAÑKĀT. 69, 17. 88, 3. दत्तपथ्याशना दूताः R. 2, 68, 10. क्रिया PAÑKĀT. 69, 18. अतो यदात्मनो ऽपथ्यं परेषां न तदाचरेत् JĀGĪ. 3, 65. यच्च पथ्यमधुना कर्तास्मि तच्छ्रेयसि AMAR. 29. (धनस्य) धनुत्पादः श्रेयान्किमु कथय पथ्यो ऽथ विलयः PRAB. 77, 4. उतिष्ठमानस्तु परा नोपेक्ष्यः पथ्यमिच्छता SPR. 448. अत्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः R. 3, 41, 1. 2, 30, 9. 109, 2. 6, 2, 1. RĀGA-TAR. 4, 224. न मे वाचः पथ्यद्वयाः प्रणोति MBH. 2, 2196. fg. देवदत्ताय oder देवदत्तस्य पथ्यम् möge es Dev. wohlergehen P. 2, 3, 73, Sch. न पथ्यं नेपथ्यं ब्रह्मरत्नमङ्गात्सवविधौ angemessen SĀH. D. 49, 5. Accent eines auf पथ्य ausgehenden comp. gaṇa वर्गादि zu P. 6, 2, 131. — b) technischer Ausdruck, etwa leitend, die Grundform angehend, normal, als Bez. gewisser Abschnitte in den Litaneien: प्रथमा विद्युत्पथः पथ्याः LĪTJ. 6, 2, 2. 4. 6, 9, 14. fgg. 1, 10, 14. प्रथमं प्रथमं न्यायं पथ्यं विद्यात् NIDĀNA 1, 3. — 2) m. a) = पथ्या b. ÇANDAM. im ÇKDR. — b) N. pr. eines Lehrers des AV. COLEBR. Misc. Ess. 1, 18. VP. 282. VĀJU-P. in Verz. d. Oxf. H. 85, b, 30. — 3) f. अ) a) perisp. Pfad, Weg: देवो अचक्रुः पथ्याः का समैति RV. 3, 34, 5. वातस्य 14, 3. अत्रिरिह्या 5, 84, 9. सं जग्मिरे पथ्याः रायो अस्मिन् 6, 19, 5. ऋत्स्यं 3, 31, 5. 12, 7. 9, 95, 2. पूर्वीर्भिर्यातं पथ्याभिर्र्वीक् 7, 67, 3. 79, 1. 10, 14, 2. 63, 15. पथ्या रेवती die reiche Bahn als Genie der Fülle und des Wohlstandes personif.: स्वस्ति पथ्ये रेवति (नः कृधि) RV. 5, 54, 14. पथ्या रेवतीर्बहुधा विज्ञेयाः सर्वाः संगत्य वरीयस्त अक्रन् AV. 3, 4, 7. eben so पथ्या स्वस्तिः (appell. in der Stelle पुनः पूषा पथ्याः या स्वस्तिः [ददातु] RV. 10, 59, 7) die Genie des Glückspfad, der Wohlfahrt, welche in die Liturgie eingeführt ist, AIR. BU. 1, 7. 8. 11. ÇAT. BR. 3, 2, 8, 8. 15, 4, 5, 4, 3. ÇĀÑKĀ. BU. 7, 6. TS. 6, 1, 8, 2. — b) Terminalia Chebula oder citrina (die Zutragliche, Gesunde) AK. 2, 4, 39. TRIK. 2, 4, 15. 3, 3, 315. H. 1146. H. an. MED. HALĀJ. 2, 463. SUÇA. 1, 132, 1. 162, 10. 2, 24, 3. 43, 3. 325, 11. °फल 338, 4. VARĀH. BRH. S. 75, 3. 76, 35. Nach RĀGĀN. im ÇKDR. auch N. für andere Pflanzen, = मृगेर्वारु, चिर्भिता, बन्ध्या कर्कोटकी. — c) Bez. verschiedener Metra: a) eine Art Bṛhatī: त्रयो ऽष्टाक्षरा उपोत्तमो द्वादशाक्षरस्तो बृहती पथ्येत्याचक्षते NIDĀNA 1, 2. KHANDAS in Verz. d. B. H. 100, 4. — β) eine Art Pañkti (8 X 5) KHANDAS in Verz. d. B. H. 100, 11. — γ) eine Art Ārjā COLEBR. Misc. Ess. II, 73. 154. — δ) eine Art Vaktra COLEBR. Misc. Ess. II, 119. 157. Journ. of the Am. Or. S. VI, 542, Anm. विपरीतपथ्या gleichfalls eine Art Vaktra COLEBR. Misc. Ess. II, 158. — 4) n. eine Art Salz (s. सैन्धव) RĀGĀN. im ÇKDR. — Vgl. अपथ्य.

पथ्यशाक (प + शाक) m. ein best. (gesundes) Küchengewächs, = तण्डुलीय RĀGĀN. im ÇKDR.

1. पद्, पथ्यते DHĀTUP. 26, 60. पेदेः अपात्सि, अपत्थास्, पदीष्ट, पादि (P. 3, 1, 60. VOP. 8, 116), अपत्साताम् (P. 3, 1, 60, Sch. VOP. 11, 7); पत्स्यते KAR. 3, 8 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10); hier und da auch act. (पदति s. u. घवः पपाद् ved.); पतुन्, पत्र. 1) zu Fall kommen, (matt) dahinfallen,

umkontnen: (निर्कृतिः) पदीष्ट तृल्लया मृक् RV. 1, 38, 6. 79, 11. 3, 53, 21. 7, 104, 16. मा मातरंममुया पत्तविके 4, 18, 1. नीचैः पथ्यत्तमधरे भवन्तु AV. 3, 19, 3. वञ्जस्य पत्तने पादि शुद्धः RV. 6, 20, 5. शतैरपद्मपुण्यैः (nach SĀJ. अपऽद्मन् gegen Accent und Padap.) 4. सो अघोरतै वृषलः पपाद् 10, 34, 11. मा पाथ्यायुषः पुरा VS. 11, 46. ÇAT. BR. 7, 1, 2, 1. 4, 2, 11. मकान्वत नो वीरो ऽपादि 14, 1, 4, 10. ता त्रिक्ताः पत्रा अशेरत KĀTH. 13, 2. अपदसि नक् पथसे (= ज्ञायसे ÇĀÑK. zu BRH. ĀR. UP. und DIV.) denn du fällst nicht ÇAT. BR. 14, 8, 45, 10. abfallen, ausfallen: पदा वै पशार्दताः पथ्यते, पेदिरे, अपत्सत AIR. BR. 7, 14. पत्र = स्रस्त u. s. w. AK. 3, 2, 53. H. 1491. HALĀJ. 4, 82. — 2) hingehen zu (गती DHĀTUP.): तेनैव विधिना मर्कृषिस्तानपथ्यत MBH. 1, 4288. अनेन चैव देहेन लोकास्वामिक पत्स्यसे 13, 167. — 3) erlangen, theilhaftig werden: ज्योतिषामाधिपत्यं च प्रभावं चाप्यपथ्यत MBH. 9, 2847; es ist wohl चाप्यपथ्यत zu lesen. — 4) sich wenden zu so v. a. sich halten an, beobachten: स्वधर्मं पथ्यमानास्ते प्रणिपत्य मकान्मने । शयनं कल्पयामासुर्भिमिया MBH. 7, 16.

— caus. पार्दयति zu Fall bringen: इदमेनमधुराक्षं पादयामि AV. 10, 3, 36. 1, 17. 9, 2, 9. 14, 2, 18. AIR. BU. 1, 13. med.: शत्रूयतो ऽधरान्पादयस्व AV. 6, 88, 3. — पदयते gehen DHĀTUP. 33, 44.

— desid. पित्सते P. 7, 4, 54. VOP. 19, 9. 12.

— intens. पनोपथ्यते, पनीपदीति P. 7, 4, 84. VOP. 20, 7.

— अति hinausgehen über (acc.), überspringen; versäumen, übertreten: न सूक्तेन निविदमतिपथ्यते AIR. BU. 3, 11. 4, 10. अत्रज्ञातं किं तथ्यदतिपत्र आङ्गिर्दे कार्यमासीदिति TS. 6, 3, 4, 8. यद्वत्तमतिपेदे KAUC. 42. Vgl. अतिपाद् TBa. 1, 2, 4, 2. — caus. verstreichen lassen: पः पार्षामासीमतिपादयैत् TS. 2, 2, 2, 1.

— अनु 1) Jmd (acc.) nachgehen, folgen: तं तु विश्रामित्रो ऽन्वपथ्यत MBH. 1, 6710. 7962. 8447. 4, 651. R. GORR. 2, 108, 3. einem Weibe nachgehen, nachstellen: उत्पथ्यस्य पवीयोस्तु — ममतामन्वपथ्यत MBH. 1, 4180.

— 2) sich begeben in: अन्वपथ्यदत्सर्वेभ्यम् MBH. 3, 239. वनमेवान्वपथ्यत 12714. R. 2, 45, 4. sich zur Erde begeben so v. a. auf die Erde, zu Boden fallen: वसुधामन्वपथ्येता वातनुन्नाविव हुमौ MBH. 7, 3361. — 3) sich begeben zu so v. a. treffen, zu Theil werden: अन्यं पाप्मानुं पथ्यताम् AV. 6, 26, 2. — 4) an Etwas gehen, sich an Etwas machen: ध्यानमेवान्वपथ्यत R. 1, 2, 25. जितमित्येव तानन्तानुपनरेवान्वपथ्यत MBH. 2, 2185. अहं कृतानन्वपथ्यम् 3, 1356. ततः प्रत्यागतप्राणा ताकुभौ परिदक्षिता । पुत्रौ दृष्ट्वा सुसंध्रान्ता नान्वपथ्यत किं च न so v. a. that Nichts, verhielt sich ganz ruhig 1, 5407. — 5) hinter Etwas kommen, ausfindig machen, finden: दीर्घं द्यौ — निमित्तं सो ऽन्वपथ्यत BRIG. P. 4, 17, 12. जैमिनिं सामवेदार्थश्रावकं सो ऽन्वपथ्यत VĀJU-P. in Verz. d. Oxf. H. 54, b, 6. — 6) verlustig gehen einer Sache (abl.): किमवान्वा मकृशिलः समुद्रो वा महेदाधिः । मकृन्नावान्वपथ्येता नभसो वातरं यथा (so ist st. तथा zu lesen) । आशायाः — तथा नात्तमकं गतः MBH. 12, 4653. — Vgl. अनुपद्.

— समनु bekommen, erhalten: कृनाह्वानं तथा धर्मं प्रजा समनुत्स्यति (warum act.?) HARIV. 11210.

— अप entrinnen: पर्यैर्वधानापथ्यते कश्चन AV. 4, 28, 5.

— अपि eintreten in, eingehen: प्राणो वातमपिपथ्यते ÇAT. BR. 3, 4, 2, 6. 7, 4, 9. जीवान् 2, 6, 4, 39. 13, 8, 4, 9. पत्तपथ्यम् 5, 3, 2, 4.

— अभि 1) herbeikommen, kommen: ऋत्विजो नाभ्यपथ्यत MBH. 1, 8105.